

राज

कामिक्स
विशेषांक

मूल्य 16.00 रॉक्या 120

सापेरा



एक
पोकेट पैड
मुफ्त

द्वि अनुपम

संजीत के लोको में सर्वोच्च कला है। एक मस्तीमारी धुन हमारे पैरों को बरबस धरकने पर मजबूर कर देती है, और उसी धुन के सुरों को बबलकर अगार सलिक बना विषा जास्तों हमारी आंखें, आंसू बहाने पर विबल हो जाती हैं। लेकिन संगीत की आदुबारी यहीं पर स्वतः नहीं होती है। प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है कि संगीत का प्रणियों एवं चेतों जैसी जीवित वस्तुओं पर भी आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। वाय, भैंस संगीत के प्रभाव से ज्यादा वृध् देने लगती हैं। और पौधों एवं फलतों के बढ़ने की रफ्तार किसी खास संगीत को सुनकर कई गुना तेज हो जाती है। लेकिन संगीत का एक वस्तुता घातक रूप भी है। तनसेन, दीपक राग से विरजला देते थे, मेघ मल्हार से बावलों को बुलाकर पाबी बरसा देते थे। ब्रज-बावरा जैसे पौबी संगीतकार पाती में आग लावाने जैसा करिझा भी दिख चुके हैं...

... आज के युग में बह कला फिर जिन्दा हो चुकी है। लेकिन अब उसका रूप और प्रत्यकारी हो गया है। 'स्पीकर' एवं 'स्मॉलीफ़ोन' जैसे इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों द्वारा संगीत की तरंगें सैकड़ों गुना शक्तिशाली बन गई हैं। और उनका क्या असर हो सकता है, यह माबाराज आज अपनी आंखों से देख रहा है—

आज ऊंट पड़ाह के नीचे आया है। मैंने बील की धुन द्वारा तेरे स्त्रों को पाले ही तेरे शरीर से बाहर निकाल दिया है। और अब इन दस हजार वॉट के स्पीकरों से होकर दीपक राग की तरंगें तेरे शरीर को ऐसे झूज देंगी, जैसे मोमबत्ती को लौ फांशो को भस्म कर देती है। आज तू अपने सलिक से मिला है लागरज। क्योंकि तू है एक मलवीय तावा और मैं हूँ ...



सापेरा

कथा: जौली सिन्हा
चित्र: अनुष्ठा सिन्हा
ईकित्ता: विठल कबले
सुलेख व
सा: सुनील फण्डेय
सम्पादक: रवींद्र गुप्ता

इत दकराव का कारण था बड़
समाचार, जो लम्बता की महीने
पहले प्रकाशित हुआ था। लेकिन
अब तक इत लम्बर की गर्मी
स्वप्न नहीं हुई थी-

म... मैं आपसे इत... इत
बरे में कुछ जनकारी हासिल
करने आया हूँ, मित...

... नीलोफर मोलत!



तुमने पहले लम्बता पचास रिपोर्टर
में इत जिन से आकर लौट चुके हैं।
कुछ लवड़े होकर वाप थे, और कुछ
लटकन! मैं पिछले दो महीने से तुम
देखी थी- बर्लौ और अम्बर बर्लौ को
बता रही है कि मुझे अपने घर लु
मामलों की सीड़िया बर्लौ के लुह
से मुजले का कोई हौक नहीं
है!...



... यह बात मैंने इत लवकी की
भी बना दी थी। मेरे पिला के साथ बर्लौने से
तुम लौने का सती कोई संबंध है, और नहीं
होना चाहिए! लुह गेट लौन्ट! फास्ट!



... और मेरी मदद करके अपनी ही मदद करेंगी, भित्त वीलीफर!

मेरी मदद के लिए पुलिस ही काफी है। मुझे प्रेस और मीडिया की मदद नहीं चाहिए।

पुलिस भी जल्दानी की मदद के बिना खान कुछ नहीं कर पाती।



और अगर पुलिस ऐसा कर सकती तो 'क्राइम टाइम्स' और 'इंडियन स्टेट टाइम्स' जैसे प्रेसों की टी.टी.वी. पर दिखाने की जरूरत ही न पड़ती!...

... और न ही पुलिस को सुनाना व्यक्तियों और भगोड़ अपराधियों की टी.टी.वी. पर फोटो दिखाने की जहमत उठानी पड़ती!

अच्छ आपके पिता के बारे में टी.टी.वी. पर एक प्रोग्राम दिखाने से कोई व्यक्ति उनके बारे में कुछ बता सके...

... जिससे उनको तलाश करने में कुछ मदद मिल सके।



इस। बात तो अच्छी तरह से समझाई तुमने! पर मैं कमजोर लोगों से बात नहीं करती। डिस्टर्ब वालों से करती हूँ!

एक झलक पर मैं तुमको जान-कारी दूंगी। ये 'स्पेक्ट्रम' के तीन ब्लॉक रखे हुए हैं। अगर तुम इनको एक बार में तोड़ दो तो मैं तुमको यह सब बताऊंगी जो तुम पूछोगे, मिस्टर...



रा... राक। राज मास है मेरा! मैं भारतीय कम्युनिकेशन में जन-सम्पर्क अधिकारी हूँ, कोई जुड़ो-कराटे का ब्लॉक ब्रेक नहीं। इस... इन ब्लॉक को तोड़ने के चक्कर में तो हाथ ही टूट जाएगा मेरा! कोई आसन भी झरना बताइए!

मैंने कहा न, मैं कमजोरों से बात नहीं करती। तुम लोहा जा सकते हो! आउट!

एक निजत! इस रिपोर्टर हैं। किसी भी कीमत पर रिपोर्टर प्रान्त करना ही हमारा काम है! मैं तो बूढ़ी ये ब्लॉक्स!



किंतु रोज की कलाहला
तहीं रुका था-

ओ 533 ह। मेरी
कुहनी ! लहलहा है
टूट गई है!

हा हा हा ! लेकिन तुमने
अजराहें ही ब्लॉक्स की
तोड़कर अरने जरूर पूरी
कर दी है ! अब मैं तुमको
सारी कहानी बताऊंगी !



रवि मेजर मेरे सौतेले पिता थे... या कहो कि
हैं। मेरी मां से उनकी मुलाकात स्वीडन के एक
दोरे के दौरान हुई थी। इन्दी के बाद मैं अर्द्धरिप
आ गई और मैं ओ। पर डेवी से मैं कुछ नहीं सीख
सकी ! क्योंकि मेरे झौक अलग थे, और डेवी
के अलग वेतों डेवी एक महान संगीतकार
थे। उनका सानना था कि संगीत को सिर्फ
मनोरंजन की संधन बनाता दुनाह
है...



... उन्होंने संगीत के अन्दर कुछ
अत्यंत महत्त्वपूर्ण धुनों की वृद्ध निकाला था !

सबसे पहला प्रयोग उन्होंने
थुहें और तिलचट्टे जैसे जीवों
पर किया था ! संगीत की स्वात
धुनों को सुनकर ये जीव स्वयं
सिंचे थले आने थे और उनकी नट
करना असान हो जाता था ! इतना
तरी के में तों कोई स्वयं था
और न ही मोहनत !

दूसरा प्रयोग उन्होंने फसलों पर किया।
संगीत की तरंगों से फसलों पर अद्वय-
जनक अंतर दिखाया। फसलों के बढ़ने की
रति के साथ-साथ उनके अन्दर अपने
आप, कीड़ों से प्रतिरोध करने की शक्ति
पैदा हो गई। और वह भी बिना एक भी
थुटकी स्वाद डाले ! इतना करने के बाद
डेवी ने अपना ध्यान उन धुनों की तरफ
लगा दिया, जिनका जिक्र तां सुनने में
आता है, लेकिन अब वे लुप्त हो चुकी
हैं जैसे... तानसेन का दीपकरा
और मेघ मलहार ! ...



... वे इसी प्रोजेक्ट पर
काय कर रहे थे, जब वे अचानक
सायब हो गए !



ओह ! पर उन्होंने
अपनी बनाई स्वात धुनों
की कैसेट या 'कोम्पैक्ट-
डिस्क' क्यों नहीं
निकाली ?

उन संगीत-तरंगों
का अन्तर नहीं होता
है जब वे खुद किसी
साज पर बजाई जाने
कैसेट या सी.डी. की
विद्युत चुंबकीय तरंगों
वेतों और पैदा नहीं
कन पाली है !



ओह ! पर वे सायब होने
वाले दिन किससे मिलने गए थे ?
अपको कुछ तो जरूर पता होगा !

यह तो मुझे नहीं पता! कोई फोन आया था, और उसे अटेंड करने के बाद डेडी ने स्क फोन किया था! उनकी बात मैं सुन नहीं सकी। लेकिन फोन करके डेडी तेजी से बाहर चले गए। और फिर मैंने उनको नहीं देखा।

आपको किसी पर शक है? मेरा मतलब... आपके पिता की किसी से व्यक्तिगत या फिर व्यवस्थित दुश्मनी तो नहीं थी?

मेरा शक किसी से नहीं है। मैंने सीतलकर पर ही है, जो डेडी से जलता होगा और उनकी गुप्त धुनों को हथिल करना चाहता होगा!... और अगर मैंने किसी आदमी ने उन धुनों को हथिल कर लिया तो फिर संगीत गुरु नहीं रह जाऊंगा, बिनाशकारी बने जाऊंगा।

परन्तु अगर मुझे किसी की संगीतकर के खिलाफ शक भी सुबूत मिल गया तो...



जारी दुश्मनी तो उनकी किसी से नहीं थी। पर संगीत के क्षेत्र में स्कदूमे की उपलब्धियों से ईर्ष्या करने वाले बहुत होते हैं।



जैलोपर की स्क-स्क बात को ध्यान से सुन रहा राज रूपी बाबरज स्कास्क चैंक उठा-



ओह! रैंकिल्ल 'इल्लके से मेरे जम्मा सर्फ के संकेत आ रहे हैं। मुझे तुरन्त वहां पर पहुंचना होगा!...

... निश्च, तुम इंटरव्यू स्लन करके ऑफिस चली जाओ! मुझे स्क जरूरी काम याद आ गया है। उसे लिपटाकर मैं भी ऑफिस पहुंच जाऊँगा!

कुछ ही पलों बाद, महानगर के नीले आकाश पर स्क हरी आकृति लहरा रही थी-

संकेत काफी तेजी से बार-बार आ रहे हैं!



महल काफी दंडीर लंबता है। मुझे जल्दी से जल्दी रैंकिल्लस पहुंचना होगा!

“रीक हिलस” एक व्यवसायिक इलाका था, जहाँ पर अधिकतर सैने गोदास थे जहाँ पर व्यापारी अपना सामान रखते थे—



ओह! कुछ लुटेरे यूरिया का एक गोदास वहीं के राजदूतों से बन्धुकों की लोक पर लुटवा रहे हैं!



लेकिन तेरे होते हुए ये यूरिया तो क्या, यूरिया के खाली बोरे भी नहीं लुट सकते!



तुम अपराधी लोग जब भी तुम्हें देखते हो, घिबलाते लगते हो! पर फिर भी अपनी आदत से बाज नहीं आते। सोचते हो कि नगराज हर जगह पर तो पहुंच नहीं सकता...



...पर तुम नगराज से रस्क बर बच सकते हो, दो बार बच सकते हो। पर बार-बार नहीं बच सकते!

तु भी इतने बच नहीं रहेगा नगराज! तेरी लोक भी एक लम्ह दिखती आती है!



और तेरा दिन, घंटा, और मिनट
झायद आ गया है!

आह!

इस ताबूली गुंडे से इतनी फुली की ठसकि
मैंने नहीं की थी!



मेरी सर्प सेवा को इसकी धूमती
तलवार लुकसान पहुंचा सकती है!
विष्णु फुंकार का प्रयोग करता हूं!

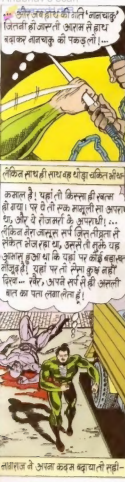
अरे! इतकी धूमती तलवार पंखे के ब्लेड
का सा काम कर रही है। मेरी विष्णु फुंकार
धधर-उधर धितरकर अपना पूरा उत्तर
नहीं दे रहा पा रही है!

वैसे तो मैं अपनी विष्णु फुंकार की
तीव्रता को बढ़ाकर इसको बेहोश कर
सकता हूं। लेकिन मैं इसको इसके
ही तरीके से हरावा चाहता हूं!...



... और 'नालचाकु' की तरह से धूमती
इन तलवारों की रोकने का एक मुश्किल
रास्ता ही है, जो मुझे चीन चक्रा के दौरान
सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और वह
यह कि 'नालचाकु' से बचते हुए दुश्मन की
संतपेड़ियों की हरकत पर ध्यान लगाकर
नालचाकु के घूमने की दिशा का पहलू से
आसानी लयाओ, और फिर अपने हाथ की उसी
दिशा में 'नालचाकु' के साथ-साथ घुमाओ ...

संघ
संघ
संघ



... और जब हाथ की गति 'जलचाकु' जितनी हो जस्तसी आराम से हाथ बढ़ाकर नानचाकु की पकड़ लो! ...

लेकिन साथ ही साथ वह थोड़ा चकित भी बन जाता है। यहां तो किस्सा ही खत्म हो गया। पर ये तो एक मामूली सा अपराध था, और ये रोजमर्रा के अपराधों! ... लेकिन मेरा जस्तसी सर्प जितनी शक्ति से निकल भेज रहा था, उससे तो मुझे यह अंदाजा हुआ था कि यहां पर कोई बड़ा खतरा मौजूद है। यहां पर तो ऐसा कुछ नहीं दिख रहा ... खैर, अपने सर्प से ही अंतर्ली बात का पता लगा लेता हूँ!



नागराज ने अपना कदम बढ़ाया तो सही—



नागराज ने यह लड़ाई तो आसानी से जीत ली—



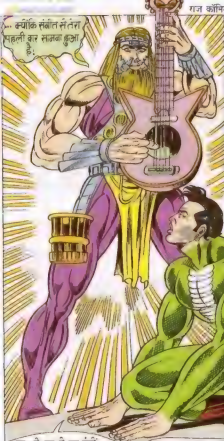
लेकिन खुद आगे नहीं बढ़ पाया—

अरे! यह संगीत की ध्वनि कहां से आ रही है! यह तो मेरे शरीर में धर धराहट पैदा कर रही है!

मेरा पूरा शरीर कंप रहा है! खड़ा नहीं हुआ जा रहा है!

अभी तो तेरा इतना भी भरा हुआ होना वाला है नागराज! ...

... क्योंकि संगीत से तेरा
पहली बार सामना हुआ
है!



सिर्फ तुम्हें बुलाने के लिए
नारायण! नाकि मैं तुम्हें एक
संगीतमय सैल दे सकूँ।

आज तुमारे इशारे
पर लाचर! क्योंकि
तुम्हें मैं वैसा ही
सचकाऊ, जैसे सोप
को सचता है सपेरा!



क्योंकि तुम हे सक... और मैं
सालखीय सोप... हूँ... सपेरा!

आह! तो तुम ही इन गुंडों
के सरबाना! और वह खतरा भी, जिसे
भोपकर मैं यहाँ तक आया था!...

... लेकिन तुम ही कौन? और चाहते क्या हो?
जो क्षति तुम्हें घटना पर भुकावे, उसके जरूरत
तुम थुरिया लूटने का सा सामूनी काल क्यों कर रहे हो?

उसने जांचकर उस घुरिया के शरीर के दरवाजे को ध्वस्त से नहीं देखा, उस दरवाजे को बाह्य से नहीं बल्कि सीधी तरंगों से उड़वा दिया था।

ठीक ऐसे ही जैसे अब मैं तुम्हें उड़ाने जा रहा हूँ।

आह! लेकिन वह दरवाजा तो मेरा तुड़ मुड़ गया था, जैसे उस पर किसी नेकट से सीधा वार किया गया हो।



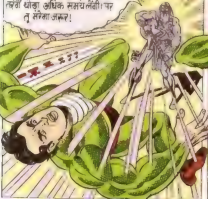
कुछ ऐसा ही समझ लो। लोहे के दरवाजे में लचक नहीं होती, इसलिए वह जरा जल्दी टूट गया था। इन्सान की शरीर में जरा लचक होती है, इसलिए संगीत तरंगों थोड़ा अधिक समझ लेनी। पर तु सरेका जम्हर!

संगीत तरंगों की लहरों में नागराज को उड़कर दूर फेंक दिया-

और अचानक ही फल नागराज को अपने हाथों को कसों पर रख लेता पड़ा-

आह... हा, संगीत की ध्वनि और तरंगों को गूँझ है!

कल बन्द करने के बावजूद भी अँधेरा घुमी आ रही है!



इस आवाज में बचसा होता, और यह काम सिर्फ एक तरीके से ही किया जा सकता है-

...अजीब के अन्धे घुसकर
झिपने के बाद !

नवराज, अपनी तर्प
सेला द्वारा बर्बाद राई सुरेश
के अन्धे घुस गया-

और सपेरा आश्चर्यचकित रह गया-

अरे ! यह तो
चूने की तरह
बिन में घुस गया !
पर ये भागे का
कहाँ...



... इस बार मैं सच में घुस
चलाऊँगा...

... सिखा चला अन्ध !!!!!!!

... कि नवराज खुद ही
नकली बन होकर-

ये राया नू, और ये
राया नेला गिटार ! अब न गल्ले का
बंद और न बजें का संगति !

इस गिटार के साथ ही स्वतंत्र हो जाऊंगा तब घातक संगीत!



अब बता! तुम यह घातक संगीत कितने कहां से मिली?

कहीं ये संगीत रवि सेनन का ही तो नहीं है? और अगर है तो यह व्यक्ति या तो मृत्यु रवि सेनन है, या इसने रवि सेनन से जबरन यह ज्ञान हासिल किया है! कदा, मैं लीलाकर के पास एक बार रवि सेनन की पेटो देख लेता!



...कि उसे उबरने के लिए वह भटकता जाकर था-

लवराज अपने स्वप्न में इतना खूब दुब गया था...

सपने के पंख संगीत तो है ही! पर तु भूल गया कि इस संगीत को घातक बनाने के लिए इसे दलहज्जों की टोके स्प्रिंकर-स्फायलीफायरों से गुजरना जना है, जे सेंरी छाती पर बंधे है!... और इसको पीवर देने के लिए जो 'बैटरी चेंज' सेंरी करार से बंधी है, उसका एक भटकता तैरे जैसे आविर्ता आली की भी पटक देने के लिए पर्याप्त है!



आवाज

और बिटार मोड़कर यह सन सनकड़ा कि तुलें मेरे लंबीला को खतम कर दिया है। मेरे बाँवों की धमने मेरी हड्डियों को धुस-धुस करके मुझे मेरी खाल के बसा ही भर देगा।

इस पर विप फुंकार का प्रहार करता ही पहुँचा।

तीव्र विप फुंकार का प्रहार!



सबराज की विप फुंकार का प्रहार—

जय का अमरदान लड़ी रहा—

अह! इन्का ना चक्कर आ गया। मेरी विप फुंकार से तो बस झिझकी के दो पैदा जिनका बका है। और सुन, मैं मेरी जो आवाज सुन रहा हूँ, वह मेरी ही यहाँ तक फैल चुका है। और यह इसलिए क्योंकि 'मल्लिन' लोट हो जाने के कारण मेरे लने में 'वीरम मिथेमडुजर' निट किया गया है।

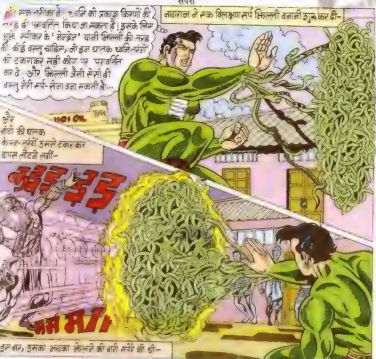


और यह! वीरम मिथेमडुजर, मेरे फुंकारों के शिम फिल्टर का काम हो करना है। इसीलिए मेरी फुंकार का कुछ पर सान अमर नहीं होगा।



अह! मैं कुछ खस लड़ी कर पा रहा हूँ। और ये भीषण कंपन मेरे अंगों के हर कणों और अन्दरूनी अंगों के झिलने जा रहे हैं। अबिर कीइ नी—

अह! मैं कुछ खस लड़ी कर पा रहा हूँ। और ये भीषण कंपन मेरे अंगों के हर कणों और अन्दरूनी अंगों के झिलने जा रहे हैं। अबिर कीइ नी—



यह इतना आसान नहीं है। लावारज!
क्योंकि जानते हो, मेरी कलाई पर क्या बंधा हुआ है। यह एक 'कीबोर्ड सिंथेसाइजर' है। और इसके साथ हैं इलैंग्मी बैटरियाँ।
यदि इसकी आवाज 'स्पीकरों' से हीकर नहीं निकलेगी, इसलिये मुझे प्ये आवद इसकी मैगीत तरंगों का असर न हो...

...लेकिन किसी और पर इसका असर जरूर होगा!



तु मुझे बाँतों में उलझाकर आवाजों की कोशिश कर रहा है। लेकिन तु अवा नहीं पसक। मेरी मैगीत तरंगों का असर विफल हो गया है तो तु कड़ाखियां सुन रहा है!

लेकिन सपेरा कलानिण नहीं मूज रहा था: और इसका पता लवारज को आने में पल, लगा गया—



ओह! यहाँ तरफ से शाली के आवाज कुत्ते डूधर ही आ रहे हैं। इनके इरादे ठीक नहीं लग रहे हैं!

ओह, ये मुझे काट रहे हैं! और मेरी तीव्र विषके इनके रबुन में बिलतने से इनके शरीर ललने आ रहे हैं!

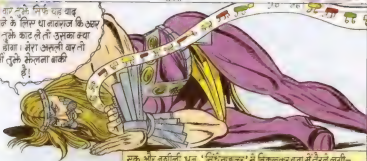
वाउ



तो ये थ तरा दूसरा वार! लेकिन यह वार नै बेकर गया। अब तु मुझे अपना पीछा करने में कैसे रोकेंगे?

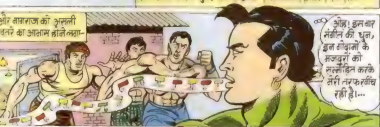


आज बार नुस्ते निकलें यह बाद
 दुलने के लिस था नागराज कि अर
 ओई तुम्हें काट ले तो उसका क्या
 जान होगा। मेरा अस्ली वर तो
 अभी तुम्हें सेलना बाकी
 है!



रुक और तहनीनी धुन, 'सिंधुनाइजर' से निकलकर हवा में तैरने लगी—

और नागराज को अस्ली
 वरने का आनाम होने लगा—



ओह! इन बार
 मेडलन की धुन,
 इन लोवानों के
 सजवरो को
 सस्लीडिन करके
 मेरी तरफ खींच
 रही है!...

और ये भी झर्निया तौर पर
 ही करेंगे, जो उन कुन्नों किया
 था, और इनका भी वही हुआ
 था, जो उन कुन्नों का हुआ है।
 इनको रोकना होगा!...

...अ इनको रोकने के थककर
 मैं सपना हाथ से निकल जा
 रहा है!... रवि सेलन की गुन्धी
 मुलाभले के लिस इसका पकड़ा
 जता बहुत जकरो है!



इस सज्जनों से तो मैं निश्चय लेता हूँ।
लेकिन जिस रास्ते में सपेरा भागा है,
उस रास्ते के स्थानों को तो मैं भी जानता हूँ।
तो इधर ही आ रहे हैं। मुझे यहाँ
से भागना होगा।...

...लेकिन चूंकि भारती के सारे
जमीनी रास्ते पर सज्जनों हैं...

...इसलिए

असली रास्ता अपनाता
सपेरा। यहाँ पर सज्जनों सज्जनों के
काटे जाने का खतरा नहीं रहता, और वृत्त
इसलिए ऊँचाई से मैं यहाँ भी उतर सकूँगा कि
सपेरा भाग कहां पर रहा है।



जल्दी ही
नाराज की सपेरा
नजर आ गया—



वह रहा सपेरा!

वह उस पुरानी सीवर लाइन
में घुस रहा है, जिसका प्रयोग
अब भिरे वॉटर टैंक के अतिरिक्त
पानी की निष्कलन के लिए
किया जाता है।

लेकिन ये मानान में भी धूम
आए, तो भी मैं इसका पीछा
नहीं छोड़ूँगा!

नाराज की सपेरा के पीछे पीछे सीवर लाइन में घु
क्या—



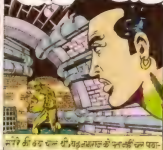
हमारा जो मित्र उस में घुसने ही
काम हमलें की उम्माद थी। चरन्तु-



ओ, यहां तो एकदम
आगि है। सपेरा अखिर
गया कहीं? इस स्थान से
तो कई नौबत सुरंगों आगे
जती हैं। तजाले सपेरा
किस तरफ भटा है?

अब तो उसे बुझना नामुमकिन—
ओह! वह रहा सपेरा! लेकिन
यह यहां पर खुदा मोग इन्तजार
कर रहा है। इन्तजी वीर से
तो यह कहीं भी भाग सकता
था।

कहीं सपेरा कोई
घाल तो नहीं कर
रहा है? तब, कुछ
और ही इन्तके पेश
नो जाल ही पड़ेगा।



सपेरे की बंद चाल थी, यह जगह का कोना नहीं जान पठा-

क्योंकि पहले तो सपेरे ने इन्तजी वीर
बलायत रखी कि लालाज लाले उसे
पकड़ सकें, और व ही वह लालाज
की जगहों में ओलाकन हो जके-



और ओही वीर
वैत ही-

ओ! सपेरा एकदम कहां
लापस हो गया? सपेरे 'सपेरा' भी
असकी कोई आहत नहीं लुग ज...
ओ! यहां पर तो दीवार टूटी हुई है। लापस
किली इन्तजाल का बेतबोत यहां पर इस लोक
लापस से शिकार है।



कहीं सपेरा इन्तजी
रामने तो नहीं भटा
है? अन्तर जकर केस
ना होला। पर अन्तर है
क्या? बड़ी तेज सफाई
आ रही है।

हमारा का स्वयंवर नहीं था।
वह एक उजाड़ और जीर्ण-शीर्ण
हमारा का तहरवान ही था, और
उस सड़क का कारण थी एक...

...कहा। यह तो एक
लाडा है। और इन बेमेलों
में रहने वाले बेवृत्तार चूहों ने
इन लाडों के अंगों के एक-एक
टुकड़े को लींच खाया है।
लेकिन इनने सोच चुके
आप कहां से ?

और इससे भी सहजपूर्ण
सवाल यह है कि यह लाडा
किसकी है, और कब से यहां
पर पड़ी है ?

कॉट की जेबों की तलाशी
लेकर देखना हूं। शायद इसकी
पहचान का कोई तुर मिल
जाए।

सपेरा की मुस्कुराहट ही
विधवा की चुके कोट की
जेब में एक पक्का सबूत
मिल गया-

य... यह तो डाइजिटल
लॉडमेंट है! रवि सेनन का!
पर सपेरा की अकल इससे
अभी फोटो से नहीं मिलती!
शायी सपेरा, रवि सेनन नहीं
है!



पर अगर सपेरा रवि सेनन नहीं है... क्योंकि उनके जल
तो फिर यह लाडा रवि सेनन की ही है! इस वक्त रवि
शोरी चाहिये! इसका मतलब रवि सेनन की धुलें और
सेनन को मार डाला गया है, और यह रात हो चुका है!...
कल 'सपेरा' का ही हो सकता है!...



... मुझे लग रहा है कि सपेरा का मुकदमे
... सिर्फ एक बान बसल... लड़ते का उद्देश्य ही मुझे रवि सेनन
में नहीं आ रही है!... की लाडा के पास तक लाया था! पर क्यों?

वैर! फिलहाल तो लीलोफर
और पुलिस को सूचना देकर
यहाँ पर बूताना होगा! नाकि
भाटा की डिगलन ओही सके,
और कबूती कार्यवाही ली!

कुछ ही देर बाद- उस उजाले
झलाने के लहराने में भीड़
जमा ही गई थी-

तुलसी सबर मिलने ही जैसे
घर के परमल डॉक्टर बंसल ताब
की भी फल करके बुला लिया था!
अगर ये कुछ बीटी घन की ही...
'नरुक्त' है तो ये उनकी पक्की
डिगलन कर सकते हैं!



कुछ ही मिनटों के
बाद परीक्षण के बाद डॉक्टर बंसल ने तर्जीज निकाल लिया था-

डाक की
गुंजकवा नहीं है!
यह रवि की ही
लाडा है!

इन इडियों पर कई ऐसे मेडिकल विज्ञान हैं, जो सिर्फ रबि के शरीर पर ही हो सकते थे।... डाक... डाक की कोई गुंजाइश ही नहीं है!

अंकल! कह दीजिए कि आप कतु कब रहे हैं। यह लाइ पापा की नहीं हो सकती! मेरा दिल कहता है...



विल और डिमरा में एक फूट की दूरी होती है, नीलू! तुम तो मुझे कहता ही पड़ेगा! याहें उसे कहने हुर... मेरा ही कलेजा क्यों ब फट जाए!

यह तो कहता मुझिल है कि यह लाइ कब से यहाँ पड़ी है! पूरा तलाश अंदाजा जरूर लगाया जा सकता है कि इसे सारे एक महीने से अलग हो गया है!

सैर! इसके तरबे का समय और काम तो पोस्टमार्टम से पता चला ही जमगा।... पता यह लगता है कि यहाँ पर ये आँखों, और उनको किसने और कैसे सता?

फिलहाल तो मुझे यहाँ से जलना है। क्योंकि रातने में मुझे एक रिपोर्ट और मिली थी। नाराज की कुछ देर पहले संपरा नासक एक संगीन अन्तर्धी से एक परिणामोक्त के बाहर सुनने व हई है। नाराज तो संपरा का पीछे कलें-कलें न आते कहां चला गया। पर वीधे से उसके आसिधों ने गोदवा की जला बुला।



ओह! पर क्यों? गोदवा जला देवे से संपरा को आखिर क्या हासिल हुआ?

इधर सब अपने-अपने काम में व्यस्त थे—

और उधर फर्क पर लड़ी नीलोफर की तिलाई एक अंगोली चीज देव रही थी—

कमराज का यह दुकवा जमीन पर कैसा पड़ा है? इस पर रवून के सिझन भी हैं! जरूर यह पाप के पास से ही घीत होवा! इस पर कोई फोन नंबर लिखा हुआ है!



हैडन इंटिग तो पापा की ही है! कहीं यह वही फोन नंबर तो नहीं है, जो घर से आखिरी बकल निकलने समय पाप ने कमराज पर लिखा था!

पता लगाता होगा कि यह फोन नंबर किसका है! कायद उससे ही मैं पापा के इन्गारे तक पहुंच कर उनका रवून पी सकूँ!



अच्छ नीलोफर! अब मुझे भी इजाजत दो! अब मुझे भी ऑफिस पहुंचना है!

एक मिनिट, राज! यह कंप्यूटर संगीतज्ञ अपराधी की क्या बात कर रहा था? और है यह 'सपेरा' नाम का अपराधी?

डिटेल तो मुझे भी पता नहीं है, बीलीफर! पर इतना जरूर लगता है कि यह कोई ऐसा अपराधी है, जिसने संगीत की अपना स्थिति बतवा हुआ है।



ओह, कहीं 'सपेरा' ही वह हत्यारा भी नहीं है, जिसकी तुम्हें मलाका है।

कल तक मेरे पास पापा के गुन गाँव के बारे में एक भी कल्पना नहीं थी...

... आज मुझे सारी मिनि स्पष्ट रूप से पता चल गई है। और हत्यारे तक पहुंचने का रास्ता भी मिल गया है।

... मैं लंबा। तभी लज्जत कहां से सागराज आ गया। उसने मुझे कुत्ते से बचाया। और यह ही बताया कि पास की उजाड़ इसमल के नख गवाले से एक लाडा रही है। तब मैंने पहले जाकर लाडा की देखा, और फिर पुलिस की और तुम्हारे खबर कर दी।

रैड इंड्रविंसे में बड़ा आदमी? कुत्ते के लौकते में ऊँचा? कम और गंज। तुम इतने छोटे हो नहीं, जितना बत रहे हो। मैं किसी फाइटर को आग बलू करके ही रूब रूब सकती हूँ। और तुम... एक फाइटर हो।

काश! तुम्हारी बात सच होती। चाहत तो मैं भी हूँ कि मैं छोड़ दूँ। एक फाइटर बनूँ।

सागराज पर डाक करने वाली की लिस्ट भी लंबी हो रही थी।

हत्यारे तक पहुंचने का रास्ता? वह क्या है?

छोड़ो! पहले यह बताओ कि तुम आसिर दस्त उठाओ इसासत के बेसनेट में फँसी मेरी पापा की लाश तक पहुंचने कैसे?



ओ... वो... वरअसल तुम्हारे जिस में जिकलले के बंद में ले सक टेक्नी नी। वह बहुत रैड इंड्रविंसे बन रहा था। जब घर के सारे तुम्हें गड़ आते लंबा, तो मैं टेक्नी बीच सन्ने में ही रोककर उससे उतर गया।

फिर काफ़ी देर तक सुनताब में कोई सवारी ही नहीं मिली। पर एक कुत्ते मेरे पीछे जरूर पक गया। उससे बचने के लिए...

और उसके वृद्धनों की लिस्ट भी-

रवि सेलस की सौत की खबर तो दखिया की पता चल गई। लेकिन अभी कुछ और लोगों को खोजा है।

मैंने सागराज को और इन कास को पूरा करने के दौरान मुझे सागराज पहुंचा। वहाँ वह मुझे ने फिर जरूर टकरात पहुंचा।

सागराज को काट तैयार करला पहुंचा। वहाँ वह मुझे काट डालेगा।



और अपना काम पूरा करने में पहले मैं किसी भी काम पर हाजिर नहीं रहता।

घबराओ मत! तुमने ताराज पर अपनी शक्तियों से वार किया था! इसीलिए तुम हार गए। तुम ताराज की कमजोरियों पर वार करो। और ताराज की कमजोरियाँ हैं, उसकी शक्तियों का क्षीण होना।



लेकिन उसकी शक्तियों को मैं क्षीण कैसे करूँ?

संसार के दुश्मन भी, अपेरा के अस्तित्व में आने की खबर से बाकफ हो रहे थे-

सरकार! सरकार! हस्तगत युनिया वाला होदाम जलवाया है! अभी-अभी वहाँ का लक सज्जन खबर लेकर आया है!



... क्योंकि शोबन जलाने वाले गुंडों ने पहले सज्जनों की पीट-पीटकर अधमग कर दिया था। खबर कौन देता? वेसे पुलिस ने उन गुंडों को बिस्फार कर लिया है!

जल गया! पर कैसे? इसको पहले खबर क्यों नहीं मिली?

ताराज की शक्ति है, उसके शरीर में बस करने वाले सूक्ष्म सर्प और साँपों की कमजोरी है वीन की धूल।

मैं समझ गया। मुझे अपने संगीत छोड़ें मैं वीन की शक्ति करना होगा। लेकिन उससे पहले मुझे रवि नेशन की उस नई को परफेक्ट करना होगा जिसे पर वह सरने से पहले कात कर रहा था जैसे 'वीपकराज' और मेघ मन्तार



... क्योंकि ये राजा तुम वह शक्ति दे देंगे, जिसके सज्जने लगे हैं दुश्मन टिक पायेंगे, और न ही साराज!



कौन थे मेरा लाशों का मुकामान करने वाले ये शक्ति?

किसी 'सपेरा' कात के आइसी के गुंडे थे, सरकार! सपेरा को अभी तक पुलिस तिरस्कार नहीं कर पाई है!

सपेरा? ये जवदुआह का कौन सा साथी बुकलन पैदा हो गया, टकलन!



और फिर टकलन से जवूर से सुली सारी दास्तान सुनाना चला गया-

इन बात का आशम दुनरो को भी हो रहा है-

ये गंडे वे गुंडे, जिनको गोंडान में आवाजवाही थी मगराज। हमने हमने हर तरह से पछनच कर लीं। पर ये नहीं जानते कि सपेरा कौन है, और रवि सेनल को किसने मारा? ये सिर्फ यही कह रहे हैं कि ये किरान के गुंडे हैं और सपेरा ने इनको सिर्फ सौदास लुटने और असफल हो जाने की स्थिति में जलने के लिए पैसा दिया है।



और सुनने-सुनते जवदुआह के साथ पर परंदागी की लकीरें पड़ने लगीं, और आंखें निकुड़नी चली गईं-

ओह! पर ये सपेरा हमारे पीछे क्यों पड़ा है? हमारा मुकलात क्यों करता चाहता है?



ओह! कहीं ये... अच्छा? मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूँ कि ये कौन हो सकता है? तुम धीरे-धीरे बदसिरी को तैयार कर दो!

जहाँ तक मैं समझ रहा हूँ, उस सपेरे का कबाला हमला यहीं पर हो रहा!



पर सक और लड़ और ललचपूर्ण जनकरी मिली है! आओ, मैं तुमको सक अदानी से मिलवता हूँ!

कौन है ये ?

यह एक दुष्टिया है! वृद्धात्मा! उसी उजड़ इमारत के पास अपनी भैंसे चरता है ये! इससे रवि सेनान को वो लड़ीने पहले इसका के अन्दर घुसने देना था! इससे रवि सेनान की कोटा से भी-उसे पकवाया दिया है!

पर इसका कहना है कि उस दिन रवि के साथ एक आदमी और उस इमारत में गया था!...

... और इसने उस आदमी का जो इलाका बताया है, वह रवि सेनान के एक संगीतकार दोस्त से एकदम मिलता-जुलता है!



इसने एक समस्या है लगाना! वह संगीतकार चंद्रकांता भी ही महीने से लापता है! और इस वक़्त वह कहाँ है, यह किसी को पता नहीं है!

ओह! संपरा को कुछ कुछ सुराग़ने मिल रहा है!... लेकिन अभी वह यूरिया रोडाम को उलाया? किसका था वह रोडाम?

नहीं! वह संयोग नहीं हो सकता कि इमारतार के सारे बैक्री, जैलरों और दुकानों को छोड़कर संपरा ने उसी रोडाम को लुटने की और जलाने की कोशिश की! इससे और कुछ संबंध है!...



और वह संबंध क्या है, वह तो जवदुआइ से मिलकर ही पता चल सकता है!



बादाम के साथ-साथ ही-

मीनोफर की रफ्तार थी जवदुआह पर ही आकर गनस हो गयी थी-



टेलीफोन बुकबादरी से मुझे उस टेलीफोन नंबर का पता मिल गया है! किनी जवदुआह का नंबर है! या तो जवदुआह ही पापा का हत्यारा है, और या फिर उसका पापा की हत्या में कोई संबंध जकर है!...



... और तच्चाई क्या है, वह तो जवदुआह को बलाता ही होगा!...



... चाहे यह जाली से मुझे उनकी मांस की जली उसकें गले से अलग ही क्यों न करती पड़े!

जवदुआह के लिए आज क्यामत की रात थी-

क्या कह रहा है, जवदुआह? तेरा दिवारा फिर गया है। मैंने पक्का करस किया है। पुलिस को आज उसकी लाका भी मिल गई है!



तो फिर ये सपेरा कौन है? संगीत तारों उसके पास कहां से आई?

और वह तेर पीछे क्यों पड़ा हुआ है? त्वेरे, वह जो भी हो!...





...ज्यादा आनाज सत्त
होवा, जदवूआह की
अपने तक बुलाल।
और इसके लिए
मुझे सिर्फ इनता
करना पड़ेगा...



...और सोलियों की
आवाज सुनकर जदवूआह
चिड़की तक बिचा चला
आता...

...आ गया, कायद यही
जदवूआह है।...

...कि मैं थप थपकर बदले के
बजाय खुले में आ जाऊँ। ताकि
जदवूआह का कोई न कोई
आँधी मुझे देखे ली...



...मुझे प्यार होनी
चहता...

...अब अपने ऊपर यही
आ रही इन सोलियों की बाद
की रोककर...



...मुझे जदवूआह का इंटरफू लेते
ऊपर पहुँच जाता थड़ित!



अब तुम कहेंगे कि तुमने क्या करवाया? तुमने कहा था-

आइए! तुम कौन हैं? मैं तो किसी और को इंतजार कर रहा था! तुमने मुझसे क्या परेशानी है?

लेकिन उसे किसी और तरह के इंतजार की आशंका थी-

इसीलिए मैंने फल का दार बंद कर दिया था-

परेशानी तो मुझे तुमसे है ही! पर अब तुमने भी मुझसे परेशानी होने वाली है... लेकिन अगर तुम मुझको चुपचाप यह बता दो कि रवि सेनल का मुकुट तुमने क्यों और कैसे किया तो मैं सिर्फ तुम्हारे साथ पैर तोड़कर ही तुम्हारे पीछे दूंगा।

रवि सेनल: उसका मुकुट कैसे नहीं किया? लेकिन तुम उसकी कीमत लातनी हो? तुमने उसके मरने से डर क्यों हो रहा है?

अगर तुमने रवि सेनल का मुकुट नहीं किया तो उसकी लाश के पल तुम्हारे फोन नंबर कहाँ से आया?

वह, मेरा रवि सेनल की हत्या से क्या संबंध...

आह! मुझे यह हमला करने की सूचना मिला करता। वहाँ हाथ की हड्डी पैर में पहुँच चुकी और तुम चुपचाप रह जाओगे।

फोन नंबर! मैं, जब तुम्हारे ने बहुत जवाब दे दिया। अब तेरी बारी है!

अब बताओ! यह हत्या तुमने क्यों की? मैं किसने की? क्या जानते हो तुम उस हत्या के बारे में...

रोकर तो नहीं, मुझसे कुछ
छोकर! और अगर मैं मरना
तो तेरी हड्डियाँ तोड़कर देना!
टुकड़ा कहने है मुझे!

बरनो पहले सरकार के कुछ
बुद्धियों ने मुझे टुकड़े की चीज
की थी! मैं तो लखनऊ मर बी गया
था। बदल की हर हड्डि के
टुकड़े ही शम थे। पर सरकार ने
मुझे बचा लिया। पैसा पत्नी
की तरह बहा दिया...



और अगले ही पल, टुकड़े ने उसे एक बार फिर
कण्ठ के निम्न सजबुर कर दिया-



दुधर अन्धर एक जोरदार लड़ाई चल रही थी-

जैसे पूरे बटल में तीस
किलो स्टील लगा। लेकिन
हड्डियाँ ही जुड़ गईं और
मैं ठीक हो गया!

अब सरकार पर हाथ ठकने
के जुर्म में मैं तेरी वैसी ही
हालत कर दूंगा, जैसी तेरी
हालत टुकड़े की कर दी थी!



लीलोफर के हाथ, कंक्रीट की स्लीब तक को तोड़ सकने थे-

लेकिन स्टील तोड़ने की उन्होंने कभी कोशिश नहीं की थी-

गर करने के साथ लीलोफर
खुद ही मर गई उरी-

आह्ह्ह!



लेकिन बाहर तैलान पहरेदारों की असीमक
हुनकी शकल नहीं लरा गई थी-



उलका पहरा, पहले की तरह ही जारी था-

और अब उनकी पहरेदारी की
जोच का स्वाद आ गया था-

नाराज! तु...
तुझ... मेरा मतलब
अप यहाँ पर?

मुझे जव्वुझाड़
में मिलता है। बस
कि वह कहाँ पर
मिलेगा? और
इतना पहना क्यों
नाराज है उसने?

-- और जहाँ तक मिलने की
बात है, वे किसी से मिलना
नहीं चाहते!...

और अगर कोई
जबरदस्ती उनका
पहंचला अड़ेगा तो
उसको रोकने के
लिए ही तो यहाँ पर
हम लोग तैयार
हैं।

तो तुम लोग मुझको
रोकावें?

यानी कुछ बातें अजब हैं।
मुझे अन्दर जता ही पड़ेगा!

तु अन्दर नहीं,
बल्कि ऊपर जास्वा
नाराज!

पहरेदार के हाथों में धमा
'रीकेट लॉन्चर' हाजिर उठा

पहरे इमलिन है ताकि
कोई बिना सरकार की मर्जी के
उसने न मिल सके!...

पर मेरा हुआ नहीं-

इस रीकेट से तो मैं इच्छाधारी
शक्ति द्वारा अपनी शरीर की कमी
में बदलकर बच आऊँगा!

अगर वह रीकेट लॉन्चर नाराज के शरीर में
टकराता, तो जरूर नाराज की वीरिय रूप में धक्का मार सकता था-

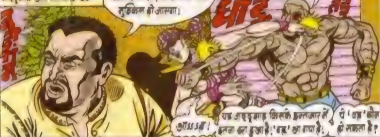
झमझमझम

लेकिन इस पहरेदारों के पास अत्याधुनिक
और घातक हथियार हैं। यानी जव्वुझाड़ किसीन किसी तरह
से अपराधी अवकाश है। वरना उसे इतनी जबरदस्ती सुरक्षा की जरूरत न पड़ती!

लोथर के धराके की आवाज
अब तक आ पाई थी। और
पड़ले से ही इलाजदार बन रहा
अब्दुल्लाह और सनकी ही उठा-

बाहर किली में रॉकेट लॉन्चर
बाध है। 'बह' आ बाध है। इतना
लड़की से अच्छी सिप्टा टकली।
बरत वीसी से एक साथ सिप्टा
मुश्किल हो जायगा।

विशाल मान कले सरकार। मैंने बड़े-बड़े पड़लवानों
की गर्दन की सिप्टों में लौड़ की है। फिर पड़लवानों
कितने रवेत की दुली है?

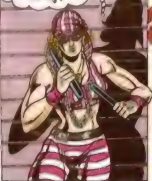


आइस डबल!

पड़ अब्दुल्लाह किले इलाजदार में
इतना कर हुआ है। 'बह' आ बाध है।

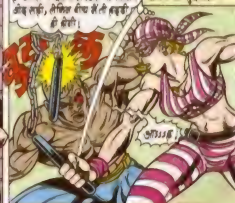
ये 'बह' कौन
हो सकता है?

सैर। पड़ले 'बह' के पड़ोआले
पर पता धन ही आया। फिरहाल तो
इस स्टीली टकली को अपने बारीर
का पिंजर खोलने से रोकना हीना।
और पड़ काज करेगा मेरा
मन धक्का।



इसका एक ही बार सजबुल से सजबुल
हकीमी और लौड़ मुकने के लिए पर्याप्त
है। टकले के बारीर में स्टील के पचासियों
अब लड़ी, लेकिन बीच में ही हकीमी
ही सेही।

नीलोत्पल से बाध में ओड़पिल
उठा लिया था, उनसे टकली
का बाध पड़ा मुश्किल था-



आइस डबल!

इस बार के साथ टकली के मुंह से बर्बतरी पीरवीं उड़ल रही थी-

लेकिन बाहर की स्थिति
कुछ अलग थी-

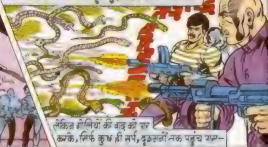
हरिहर कुमरों के हाथ में थे,
और बचला लवराज की था-

यहाँ का और सुनकर
चारों तरफ से पहले-पहले
मेरी तरफ ही आ रहे हैं...
लगातार है जवदूझ तक
पहुँचने में समय लगेगा!



दो पहरेदार तो कम ही शायद हैं!
अब इनकी सस्ते में ही गैकना
होगा!

लवराज की सर्प सेना, आने हुए बुझलों की तरफ उधल गई-

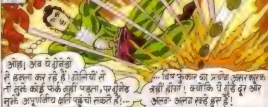


लेकिन गोलियों की बौछ को पार
करके, सिर्फ कुछ ही सर्प, दूकानों तक पहुँच गए-

और उनसे निपटना टूट पड़ेगा
के लिए कोई सुविधा का लगी
था-



इससे पहले कि लवराज परिस्थिति मसल
कर कोई बमरा बार कर पना, उसे खुद ही
बचने के लिए विवश हो जाला
पड़ा-



ओह! अब ये गुनेडों
से डरना कर रहे हैं! गोलीयों से
तो तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, पर गुनेड
तुम्हें अपूर्णतया क्षति पहुँचा सकते हैं!...

... बिप फुकार का जखान असर करक
नहीं होगा! क्योंकि ये हाँडे दूर और
अलब-अलब खड़े हुए हैं!



जव्वु बाइ, चिलहाल
भांगे का रास्ता दूब रहा था-

जब तक घेरी में लड़ रहे
हैं, तब तक मैं भाग लूँ। वही-
कि टकला, इस लड़की को
रोक नहीं पाएगा!



नीलोफर का पूरा ध्यान
जव्वु बाइ पर ही था-

ओह! जव्वु बाइ
भांगे की कोछि
कर रहा है!



पर मैं उसे भांगे
नहीं दूंगी!

नीलोफर जानचाकु के मुँह से
ज्यादा इस्तेमाल जतनी थी-

जव्वु बाइ लड़कर बाकर जलीत पर आ घिरा-



यह जुबान रबलवाले का
तरीका नहीं है! पहले
इसका अपराध तो जान
लो!

बिला अपराध के सच्ची
करना से तो मानवीय रूप से
जायज है, और वही कानूनी
रूप से!

और नीलोफर ने उसे बाज
की तरह दबोच लिया-

तूने अपने सारे वार
कर लिए जव्वु! अब
मेरी बारी है! चुन ले,
जुबान खोलो, या तोंगे
बन्द करवाएगा?

आ धर घड़ा



नासिराज!

अपराध जानना चाहते हो इसका?
यह मेरे पिता संगीतकार रवि मेनन
का कानिल है। वरना मेरे पिता की
लाश के पास इसका टेलीफोन
नम्बर कहाँ से आता, और यह
इतनी सिक्योरिटी क्यों रखता?

न... नहीं, नहीं! (अक)
ब... मैं रवि मेनन का
कानिल नहीं हूँ। और वो
फोन नम्बर तो उनके
फ्रेंड इसलिस द्वारा,
क्योंकि उनसे मेरी पुत्ली
जान-पूछान थी!



यह हावव सच बोल रहा
हो विलीफर, या शायद झूठ!
पर राज ने मुझे इस केस
के बारे में काफी जानकारी
दी है।

और मुझे लग रहा है
कि तुम एक बात बताना
जावनी नहीं हो या भूल
रही हो। और वह यह कि
रवि मेनन की मौत के दिन
उन स्टाइड में उसके साथ
उसका सखी संगीतकार
चन्द्राग्रिनी भी बचा था और
वह तब से लापता है!



और तब से सबकी पर एक स्पेस अपराधी भी घूम रहा
है जो अपना नाम स्पेसफ़ोर है, और अपराध संघित से कलत

इसलिस जब तक यह तथ्य
नहीं हो जाए कि असली
कानिल कौन है, तब तक तुम
इसकी जाब-जेब की कोछिका
न करी। वरना मुझे पहले
तुमको रोकना होगा!



यह तो संभव नहीं
है जगराज! क्योंकि
अगर ये कानिल नहीं
है, तो भी इसका इस
हाथ से संबंध जरूर हो।
इसीलिये मैं इसे जल्दी
आजाब नहीं कर
पावती!

नो फिर तैयार हो जाओ
मेरी सर्व सैन से सिफ्टने
के लिये— ओह!

मैं तुमको इतना सैक नहीं दूंगी
कि तुम मुझ पर बार कर सको!



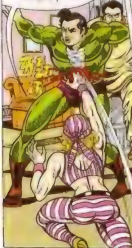
इसी वक़्त बाहर—

ओह! मुझे
रहने कोह और य
तक पहुँच चुका है।
मुझे मतक रहना
पड़िया!

अन्धरे गोगराज और जीलोफर
बिना बात के ही आपस में जुझ रहे थे-

तुम अपने होड़ में नहीं
हो जीलोफर! बदले की भावना
से तुमको अंध कर दिया
है। तुमको होड़ में लाल होना
और इसके लिए मैं कितनी
इधर कर इन्तेंजाल नहीं
करूँगा। क्योंकि तुम भी
सिंहनी ही हो...

क्योंकि मेरी उँगलियों
का बार तक तुम्हारे पेट को फाड़
सकता है। अग्रे सोचो कि आँसू में
तुम्हारे बिल पर बार कर दिया तो
क्या होगा?



यह कितना आस इन्तेंजाल का
साँस! बल्कि गोगराज का शरीर है नैतिकता
मेरे छाँवों को तो मेरे शरीर के मूकमर्प
भर देंगे। लेकिन, तुम लटक रहना। कहीं
मेरा खुद तुम्हारे शरीर के अन्दर घुस
जाऊँ तो तुम्हारे अंगों से मेरी
नरक बन जायगा!

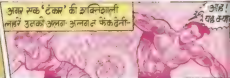
तब तो तुम
पक्षताओं का मरना

यह तो डाँड़
त आते कितनी देर तक चलनी-

आ 555 है!
हु ए टाक



असर मक 'टंक' की अक्लियाली
लाहरे उलकी अलका अलगाव फेंक देनी-





कि तू कलिल SS SSSSSSSSSS PALLIARAD



मेरा हॉस्क बटाले की
केंद्रिका कभी मत करना!
क्योंकि जो पीवर मेरे स्पीकरों
को चलाती है, उसी की बिजली
मेरे हॉस्क में बिने स्टील के
तारों में सी बौबूरी है!

अब मैं तेरी कबाली
स्वतः करूँगा, जव्वु-
आह!

पर क्यों, सपेरा?
इसको क्यों मारना
चाहते हो तुम?



इसका जवाब मैं तुमको
देना जरूरी नहीं समझता तबराज!

पर तुमको चेतावनी जरूर देना
चाहता हूँ। तुम एक बार मेरा रास्ता
काट चुके हो।... दुबारा मत काटना!
वरना तीसरी बार काटते लखक
बच्चे ही नहीं!



मैं इस कबाली का रहस्य बूढ़ते-बूढ़ते
परेखान हूँ राख हूँ। कौन किसका दुश्मन है,
किसने मारा रवि को और तुम जव्वुआह
को क्यों मारना चाहते हो? क्या संबंध
है, जव्वुआह का इन सबसे?

अब, जब तक मैं सच जान
नहीं लेता, तब तक मैं इस केस
का इंचार्ज हूँ। बगैर मेरे कहे तल्लो
कोई किसी पर हाथ ठगरागा,
और त ही किसी का खून
बहेगा!



मैं तुम्हें चेतावनी
दे चुका हूँ,
तबराज!...
...सच्चे से नारा
को टकतला नहीं
चाहिये...
...क्योंकि जला
सपेरे की एक
बार तो काट
सकता है...

...ले, तुम और चीन्हा!

... लेकिन तुमका सपना उसके काटे की जड़ी पकाने से ही तैयार करके रहता है। मैंने ही एक ताड़ी, कई काटे तैयार कर ली हैं।...



आह! यह नीली सीटी तो मेरे कितारा को ऐसे सध रही है, जैसे मिलक कोक की सिक्की!

बाध, काव पर रहने से यह ध्वनि रुक नहीं पा रही है!... यह आवाज मेरे स्वर स्वाधुनिक को सपट कर देगी।

कुलकी रोकने का एक ही तरीका है...



मैं अपने शरीर के मुहान सपों को अद्वैत देता हूँ...

... कि ये मेरी 'अव्यक्तली' को अवलोक कर दें, ताकि आवाज क्षणिक तक पाहच ही न सके!...



... ध्वनि की तो मैं अभी भी... अब सबसे पहला काव इस सीटी को सहस्रमंजु कर सकता है! पर अब बंद करवा है, और यह काव मेरे सर्ववत्सके हमसे शुरू बेचैत करने योग्य मुंड में लगी तली के धिक्के की बन्ध करके नीकल रही है!...

आस में कर सकते हैं!...



...अच्छ बात है।
मेरे मुँह से लपेटने वाली
को बंद कर दिया है।
तीखी छवि निकालनी
बंद हो गई है!...

...इस घंटी में मैं बिजली
कौड़ाकर भी तेरे लोंपी को हटा
सकता। क्योंकि मेरा कले
में तेरे घंटा ही जलत सकित
होकर खराब हो जायेगे।



पर चिल्ला की बात नहीं है। मेरे
लिप में एक खस हथियार लपटा है!...

...मेरे काल बंद होने के बवजूद
इसके केवल मेरे अंग में ज्येष्ठ
पैदा कर रहे हैं!... इससे
बचने का कोई तरीका नहीं
है!...

हा हा हा! देखी ले।
अग्नि सागराज! अगर मैं
इस धुन की नीवना की जग
म और बवा दूँ तो तेरे डारिके
लपे भी बाहर निकलकर
लपने लगेंगे! अबत और
कुछ नहीं कर पय्या!...



...यह बीन! अब मैं उसी
सपना बन गया हूँ। इस खस
बीन की खस धुन सुनकर तेरे
पैर अपने-आपको रोक
नहीं पायेंगे!

पाइयों में डोनी हुई मेडलिन
बड़ा बीन में से गुजरी,
और मेडलिन लहरें हवा में
तेरते लहरें-



जोड़, मचमुच मैं इस धुन
का प्रसिरोध नहीं कर पा रहा हूँ! यह
मुझे सदहोश कर रही है!...

...अब तेरी मौत का वक़्त
आ गया है जवु! और तेरा
मसय बरकब त हो, इसीलिय
मैं तेरे करने और किरकर्म
का काम एक साथ ही
कर देता हूँ!...



...दीपक
रक्षा में!

संसार की जड़ भरी है बलियाँ छिदार के तारों पर धिरकते लसी, और बी अल्पा-अल्पा धूलें, स्पर्शकर-स्पर्शलाफार में होनी हुई, जव्वुआइ की नरक-लपकी-

और तबों के इम सल्लिभन में पैदा हुई 'दीपकरन' ने वायु की पर्तों के बीच रुक स्था भण्डन धर्यन पैदा कर दिया-

जिसने जव्वुआइ के झरिर को सुलसला गुन कर दिया-



आइसह: मुझे क्यों जल रहे हो तुम ? क्या बिगड़ा है मैंने तुम्हारा ?

जलना चाहता है ? बनाए हूं। क्योंकि मैं भी तुमसे कुछ जलना चाहता हूं। तु देव्य मेरी शक्ति ! कहधान मुझे कसीने। देख तुने क्या हाल कर दिया है मेरा।



रवि सेलत ! आइ... तु... तुल जित्वा हो ? सर राख रे... फिर वह लाइ किनकी थी ?



वह लाइ वंद्रडीका की थी। बेचारा : मैंने उसे बचते की बहुत कोशिश की ! पर बचा नहीं पाया ! अब अगर तु जलने से बचना चाहता है तो मुझे यह बात कि जहाँ पर तुने मुझे फेंक करके बुलाया था, वहाँ पर मेरे कहने पर तुमों में हमला मुझे पर किसने करवाया ? क्योंकि वह अजान हमारे वहाँ पहुँचने की आज्ञा देता था...

... हमलिया वह यह नहीं देख पाया कि वहाँ पर मैं अकेला नहीं गया था, बल्कि दो लोगो गए थे !...

...पर मेरे, सोचने का उसकी एक
अलक देखा थी। वृद्ध जैसी-अकृति
थी उसकी। और था वह ?

वह मृत है। परन्तु
का आवसी। उनकी इच्छा पर
पुष्टि लेना पर इरला किया था।
अद्वितीय वृद्धों का देखा है वह।
अब। अब तो मुझे इस जलत
में मुक्ति दिला दी। बचती
रुम्मे।

मुक्ति ? दिला दूँगा, जल्दी। मैं किन चकर मर
कर है ? धोखा और लूट पर मैं ऐसा करूँगा नहीं।
ले। अब मैं तुम्हें इस जलत पर ले जाऊँगा।
मैं धोखे, तो तुम जिन्दगी की मुक्ति दिलाऊँगा
अब इस जलत में लूटकर जिन्दगी में देव सपनों
रहेगा। पर लूटने नहीं के पीछे मेरा मंगील
मुन्त में धोखे लिए।
और फिर बिलकरीज
तुम्हें मुक्ति।

अभी आओ
सब।

दीत की धूल पर सच रहा
लहराज, सारी बत्तें मृत रह
रह-

धोखे सबकी पर मेरे मेरे
उठ रहा है। लेकिन कुछ अभी
भी बाकी है। 'सपना' वाली रवि
संसार किली का मृत करके
अपराधी बनने जा रहा है। इसे
रोकना होगा। पर कैसे ?
मेरे।

लेकिन सपना, यह सपना
बनने ही भोर चुका था-

मेरे लिए मैं एक हीज
सपना करेगा और स्वीकार के
सच यही धोखे जा रहा है। अब
तु मेरे पीछे आना भूलकर
सब तक साधना रहेगा, जब
तक तु एकबार और विश्वास
बढ़ाऊँगा नहीं हो जाता।

सपना के आने ही दीत की धूल में
अबो-अब ही बस हो जायगी। फिर मैं
धिकरने से आज्ञा होकर इसके पीछे जा पाऊँगा।

लहराज की साधना हुआ धोखेकर सपना बहाने
में तुलना मफूककर ही गया-

अच्छे। सपेरा तो अपना एक बीज यहाँ पर फेंककर भाग गया। यह धूल मुझे पर इतना तेज असर कर रही है कि मैं इसके इतना पता भी नहीं जा पा रहा हूँ कि इसको जूती के नीचे दबाकर तोड़ दूँ...

... और यहाँ पर मेरी सबूत करने वाला कोई भी नहीं है। सीसीफर बेबीका पट्टी है, और जवबुआब स्वयं से बंधा, अपनी ही तकलीफ से लड़ रहा है।

... यह क्या अब तक मेरे विश्वास में क्यों नहीं आई? मेरे पास एक कवच तो है। मेरे सर्पों का कवच। अभी इनको आगे बढ़ाना है कि ये मेरे शरीर से लिपटकर एक तबियत का कवच बनावें, ताकि ये धूलक बीज-तरेवाँ उनमें से मौत नही जमं।



आगे सिम्पने ही बीज की नींव धूल पर झुलने लगे नज़, सागराज के शरीर पर एक 'सर्पद्वारा' बीजने लगी-

और कुछ ही पलों में सागराज का शरीर तरलमाने सर्पों से ढक चुका था-

अच्छा! अब ऐसा पड़ा। अब तरेवाँ मेरे शरीर तक जायें। बास्की होकर आ रही है। और इनकी शीप तरेवाँ मेरी कुछ क्षमता को दबा नहीं सकती। अब मेरा मुँह खोलो...

इस बीज की तराँवों से काट बन्द होने के बख़तर भी मेरे शरीर से टकराकर कुचल पैदा कर रही हैं। अगर कोई ऐसा कवच होगा जो इन तराँवों को मेरे शरीर तक पहुँचने से रोक सकता है... और...



अहो! जेलों में, वह मेरे
कहाँ गया? लड़कियाँ हैं मैं
बिल्ली के आँके से कुछ
जबड़ा बरतक ही बेहोश
रह गई!

हां, नीलीफर! और अब तुम्हारे
होश में आने का वक़्त भी आ
गया है। पूरे होश में आने का
वक़्त! जव्वुआब स्कूल हत्या का
सहयोगी तो अवश्य है, पर
तुम्हारे पिता रवि मेहनत की
हत्या का नहीं!...

...तुम्हारे पिता रवि मेहनत
जिन्दगी हैं। पर अब वह रवि मेहनत
नहीं, 'सपेरा' बन गया है। जो
लड़का मैंने वीरस दुआस में दे रखी
थी, वह रवि के रिश्ते संबंधितकार
चंद्र प्रीत की थी!

और उस हत्या का
चतुर्थ जव्वुआब का
ही रथ हुआ था...
इसकी आपसे किसी
तलाश तो सपेरा खुद
दे गया...



...पर अब वह हत्या का
प्रयत्न करने वाले किसी 'मृत'
के पीछे गया है। इसकी उसने
रोकना बीबा!..

...वह रवि हत्या का
बल जल्मा! इसने
तुम्हारी मदद की उम्मत
भी पढ़ सकती है। अब तुम
का टिकना पना करना है।

और वह पता जव्वु-
आब बताया: बोला,
जव्वु, कहाँ रहता है
वह मृत?

वो... आह... 6
अप्रे लैन... स्वनि
लन में मिलेगा!...
आह! अब तुम
इस जलन में
मुक्ति दिलाओ!

गुप्त परस्पर
परस्पर थे-
न जाने क्या बात है। घंटी
पर घंटी बजे जा रही है,
पर जव्वु के रथों कोई
फोन ही नहीं आ रहा
है। सब मर गए हैं
क्या?

अधरारे ही
पुके हैं!

मैंने बोला।
सपेरा ने!

कौन है रे नृत्य
नेरी आवाज तो
जैसे रेडियो से
आ रही है!



इस जलन में
पहले संबुलन का फोन
कतने आसंवा!

बेतेरे साथतेरे
दुटे-फुटे पाइरेदनों
की भीले आसंवा!

ये कौन
बोला?

मैं तेरी मौत हूँ,
और तेरी भी मृत्यु! तुमलोगों ने
जो मुझे दिया है, वह मदद नहीं
वापस करने आया हूँ!...

... और मही मेरी जवान की बात तो वह इतना ही है क्योंकि तेरे गाने में वायस सिंघे साइजर फिट है! और वह इतना ही क्योंकि तुमने अपने चूड़ों से मेरी 'अवज' बांधियां बुचन दीं! ... संगीतकार के साथ-साथ, गायक बनने का मेरा सपना चूर-चूर कर दिया...

... और मेरे सबसे छिपे छिपे की जान ले ली। चंद्रशेखर की कथा अब भी यह बताने की जरूरत है कि मैं रवि मेकल हूं। और मेरे 'बनकर' एक साथ से लिया हुआ दोषों हाथों से वापस करने आए हूं।

फर... नुक़्करी डकन ली...

यह स्क मास्क है

ओह! यही जवुआ नहीं कह रहा था! तुमच गया! हमारा धंधा खराब करने के लिए! मुस तो तेरा 'कुल-और फाइनल' हिसाब नहीं कर पाया...

... पर मैं कर देता हूं! कुछ काम अपने हाथ में ही करने चाहिये!



नो तु मुझे शोली मरेगा! ले! मैं तेरे हाथ की ही इन लायक नहीं धोवंगा कि तु दिवार दबा लेंगे!

स्क बांज भरी टंकक परसू की लपक लपकी -



और पिस्तौल से तुरन्त ही निकली शोली के साथ-साथ, पिस्तौल की मैगजीन में भरी सारी शोलियां स्क साथ फट पड़ीं-

उतसे पहले कि परसू दब साहसूम करके चिल्ला पता तुम्हका बग में उड़ना हुआ वेहोका वदर कांचोवुना हुआ परज अमिर-



मैंने पहली बार अपनी डाकन धियाने के चककर में भटक खाली की थी! तेरा फुल, फाइनल और परमानेंट हिसाब नहीं ही पाया! पर इस बग मैं शाली नहीं दोहराऊंगा!



सम के मुंह में एक
अजीब आवाज निकली-

और एक दरवाजा मने घेरकर लेना लगे
उस पर खंडर से भयंकर दबाव पड़ रहा था-

लेकिन इस बार ये कमजोर
नहीं हैं। क्योंकि इस बार
मैं इनको जल्द कर रहा
कर दूंगा!

दीपक गह
ले चुहों के
रामन में अवा
की दीवार खड़ी
कर दी-



लड़कियां पांच सेकंड बाद ही मपेरा
को यह पता चल गया कि दरवाजे
के पीछे का दबाव किस चीज का था-



चुहें, सैकड़ों।
हजारों चुहें।...
यही लगे चुहें यही
पर भी उनका
गन्ना है।

चुहें
चुहें
चुहें

लेकिन चुहों को अपनी जगह में ज्यादा
स्मिक के अंदर की परवाह थी-

आह! ये चुहें... तो अल की दीवार
पर काफ़ी मुश्किल पर कुछ रहे हैं। सोरे
विक्टर की लकड़ी को काट रहे हैं।
कुंसे काट रहे हैं।



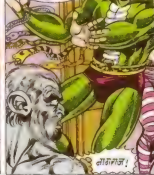
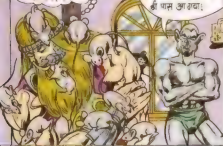
पिछली बार इनके भई बल्लों ने मेरे
होस्त के गोश्त का स्वाद चखा था। आज ये
मेरा दिल काट करके अपनी भूख मिटाएंगे!

फुल, फाइल
और परमानेंट तरीके
से।

आससह! मैंने इन चुँहों की अपनी
नई शक्तियों के सामने बहुत कम करके
आँका था। पर इनको इसलानो जबरन
है। ये तो मुझे लोचें बाँट रहे हैं। कोई
धूल या राधा सोचने तक का लौका
सही वे रहे हैं!

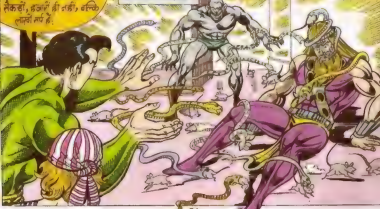
देख? मौत, इन्तन
को उस जगह पर खींच
ही लाती है, जहाँ उसे
सबका श्रेष्ठ है। न बच गया,
भाव गया, लेकिन फिर
वापस सरने के लिए मेरे
ही पास आ गया।

लेकिन जिसकी मौत न आई
हो, उसे बचाते के लिए अब
किसी साधन को भी भेज
वेना है।



मेरे पास अगर हजारों चुँहें हैं तो
उनको खाने के लिए मेरे पास
लौका हैं, हजारों ही नहीं, बल्कि
लाखों सँ हैं।

नाराज के इरीर में सूर्यमैन की बाद निकलकर, चुँहों की तरफ लपक पड़ी, और
उनकी निशानें लगी—



अब तुम्हारी बारी है, मूस! अपने चूड़ों को बापस बुलाओगे, या उनको मेरे तांपों का भोजन बनवाओगे!

मेरे पात बहुत घूँहे हैं, तारा राज! तू अपनी तांपों की खबर मना! अगर स्क-स्क तांप पर धार-धार चूड़े पिल पड़े तो तेरे तांप भी नहीं बच पायेंगे!



तारा राज और मूस के अन्त में उलझने से—

लीनोफर और रमिसेनत उर्फ 'सपेना' को स्क-वुमर से मिलने का वकन मिल गया—

ओ... आप जिन्दा हैं पापा! पर ये बात आपने इस मजसे क्यों छिपाई?

और... जब दुःख और परस्मू से आपकी दुश्मनी क्यों हो गई?

शुरू से मुझे तेरे सब मसलें जाओंगी!



मूसको यह होना कि मैंने संगीत के तथ्य में फसलों के बढ़ने की रफ्तार बढ़ा दी थी, और साथ ही साथ उनके अन्तर की डे-सकोई से बचने की प्रतिरोधक ऊर्जा भी बढ़ा दी थी... इससे जब दुःख और परस्मू के दिल में बेवजह का झूठ बैठ गया। क्योंकि स्क खादों का डील था, और दूसरा कीटनाइक दवाइयों का!



इनकी यह हर ही वक कि इस इलाके में इनका साल बिकल ही बस ही जम्मा, और ये बर्बाद ही जम्मा। क्योंकि इनके पास इसी इलाके की डील थी... यह सोचकर इन्होंने तुरन्त राने से इटाई की तालीं!

इसके लिए पहले तो इन्होंने मुकसे मादली जल पकचल की, और फिर दो-तीन मुलाकातों के बाद, स्क विल जब दुःख ने मुझे फेल किया। मुझे बताया कि उसे अपनी स्क इसलत की खुदई में कुछ प्राचीन हस्तलेख मिले हैं जो संगीत से संबंधित लगते हैं। यहना था कि मैं उनको स्क लजर वेबलू ताकि यह पता चल सके कि वास्तव में सबसबूर है या नहीं—



अच्छा? मैं धोड़ी केर में आपकी फील करत हूँ!

आप अपना लजर मुझे दे दीजिएगा!

"मैंने जदवू झाह के कथम को
गंभीरता से ले लिया। मुझे किसी
पुहचर का सहाय तक नहीं आया।
मैंने तुरन्त चन्द्रश्रीश को फोन किया,
मैंने उसे ही राध चलने के लिए कहा-



"वहां पर कोई भी नहीं था।
पर बेसमेंट से कुछ स्टाट-स्टाट की आवाजें आ रही थीं--"

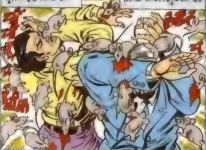
"क्योंकि मैं उस कब्रदाने
पर किसी दूसरे विरोधज्ञ
से शक्ति का की राध भी
आवना चाहता था। फिर
मैं और चन्द्रश्रीश उस
उजड़ इमारत तक जा
पहुंचे-

"हम सीधे पहुंचे, तो मैंने दलियारे के कोठे में भागने हवा
सूत की एक शकल देखी। पर हमने पहले कि मैं उसके
पीछे जा पता--"



"हम पर कुछ घंट-घोटे सैकड़ों जीव
कूद पड़े। ये वही घूँसे थे जिनकी
मूस ने टैंड किया था--"

"दूसरे लेबलने से पहले ही
उस सोसाबारी घूँसे ने
हमको सोचता धुन कर दिया-



"मुझे पहली चिन्ता चन्द्रश्रीश की हुई। क्योंकि उसे मैं ही वहां भुलाकर
ले गया था। मैंने अपना कोट उतारकर उसे दकले की कोशिश की
पर उस पर घूँसे पहले से ही काफ़ी सज्जा नें दूट चुके थे--"

"मेरी ही हालत, चन्द्रश्रीश जैसी ही हो जाती, अगर
फेर वक़्त पर मेरी लक़र उस 'भाकध अर्वाइ' पर न
पड़ जाती, जो कोट की जेब में लिपककर जमीन पर
गिरा पड़ा था--"



"मैं अपने धके फेफड़ों में जितनी अलसदार धूल बजा
सकता था, वह मैंने बजड़ा। उरुतें घूँसे भागती नहीं,
पर उनका इसला धोड़ा धोड़ा ज़रूर हो गया--"

तब तक रुहे मेरी आधा संतन रहा चुके थे। मैं चन्द्र कीड़ा की तरफ मुड़ा।
 घूमे उसका लबाबरा पूरा संतन रहा चुके थे।
 उसके जिल्दा बचे रहने का कोई संकल ही नहीं था। मैं ही खुल में तरबतर था। बड़ी मुश्किल में अपनी होठ में भालकर मैं दुसलन में बाहर निकला। मुझे कुछ होठ नहीं था कि मैं कहाँ जा रहा था।...



... पर मेरा अचेतन स्तितिक मुझे सही जगह पर ले जा रहा था-

डॉक्टर बंसल के पास। बंसल मेरी दुसलन देखकर चौंके उड़ा। उसने तुम्हारे को बुलाने के लिए फोन उठाया। पर मैंने सर के सकलरत्नक डकार से उसे सदा कर दिया। क्योंकि मुझे पता था कि अगले दिन मैं तुम्हारे करटे चैम्पियनशिप की प्रतियोगिता करूँ होने वाली थी। मैं नहीं चाहता था कि मेरी बजल में तुम परेकात हो और तुम्हारे चैम्पियनशिप जीतने में व्यवधान पैदा हो-



"सर हिलाकर मैं बेहोश हो गया-

"और जब मुझे होठ आया तो मेरे गले पर चोटियाँ बंधी थी। यहाँ मेरी आवाज गुंथिये बीच हली थी। शाना नी वर मैं बोल सक नहीं सकता था। चन्द रूपयों के लिए मुकते सक महान होठ धोत लिया था। मैंने बचने की दतली। यह काम ऊपर मैं पुलिस य कलन की मदद से करने की तैयारी, तो कभी न कर पता। वे हत्यारे, कलिन सुबूतों के अभाव में छूट निकलने, और मेरा दिल मुलबता रह जाता। इसीलिए दुलिय की लजरो में रवि सेलन की सारकर मैं 'मरेर' बन गया-



"और इसमें मेरी सबसे बड़ी मदद की डॉक्टर बंसल ने। उसने मेरी 'वोकल कॉर्ड्स' के स्थान पर 'इलेक्ट्रॉनिक वीथल सिंथेसइज' लगा दिए। मेरे लिए पीकर फुल स्पीकरों का इन्तजाम किया-

"और बकी तरी चीजें लगाकर मुझे मरेर बना दिया। यह बात इसने तुमसे भी छिपाई, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि रवि सेलन के जिल्दा होने की बात सुने और लोग तुमको एक कलिन की बेटी के नाम से पुकारें-

हल सब कामों में मददगार हो महीने
बैठ चुके थे। लेकिन नबलक भी
'रवि सेनन' की लाइ किसी की भी
तुर्ही मिली थी। इसीलिए पहले तो
रवि सेनन की लाइ की दुनिया के
सातसे लाल बहुत जरूरी था, और
फिर बचने के उलियाल पर निकलना था-

"इसके लिए मैंने जदुद्दाह के
युरिय मोदात को निजामा बनाया
और फिर नाराज के जरिये
अपनी लाइ की दुनिया कर्ने के
सातसे ला दिया। बसलने भी
'मेरी लाइ' की पहचान कर
सबके डक दूर कर दिस--"

लेकिन जदुद्दाह से सच
अलवासे के लिए मुझे अपना
असली रूप उसे दिखाना ही पड़ा
और बदकिस्मती से नाराज
ने भी यह बात सुन ली।

पर जो हो गया
सो हो गया !
अब हल मुझे
अपनी कर्ने का
फल मिलना ही
चाहिए। तुम इसे
छोड़ दो नाराज



होश में आओ रवि ! तुम
सक सेगीनकार हो, हथियार नहीं !
इसे मारकर अपराध की दुनिया में
मत जाओ ! वहाँ मैं तुम कभी बचस
नहीं आ पाओगे ! कनेडा के लिए
'सपेरा' बन जाओगे ! अपना
काम कानून के लिए छोड़
दो !

कानून ? हाहाहा, कहां से
लाऊंगा मैं सुबूत ! कहां से लाऊंगा
यकसदी सबूत ? मैं कानून कानून
देखता रह जाऊंगा, और ये हथियार
खुद जांचेंगे... अपना बदला मैं
स्वबलूंगा ! तुम हट जाओ !

ये काम मुझे करने दीजिए !
अपना बदला मुझे पर छोड़
दीजिए !



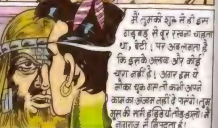
नहीं, रवि ! सुन से
अपने हाथ मत रवा !

नाराज ठीक कह रहा
है, पावा ! आप ये काम नहीं

तुम दोनों को ही वस्त्रों की बिलाली की चमकने
आधा कर दिया है! इन लोगों की सजा तो अवश्य
मिलेगी, लेकिन वह कब तक देगा, तुम दोनों नहीं।
अगर तुम्हारी तरह हर इन्सान सोचने लगे तो इस
संसार की एक आदिकालन कबीला बने और नहीं
लगेगी।

यह बदला नहीं, न्याय है साराज। ऐसा
न्याय, जो इन जैसे वृद्धियों के साथ होता
ही चाहिए। और अगर इस न्याय के
बंद में तुम आओ...

... तो तुमको ही
नीलापूर सेने की लोड़
देसी, जैसे कालन को
लोड़ रही है।



सजा के करता छोड़ दो नीलापूर,
शरीर से अधिकतर सत्य निकल
जावे के कारण मैं अज्ञान जग
ही गया हूँ, पर इतना अज्ञान
ही नहीं कि मैं तुमसे ही
न निपट सकूँ।

ओहह!
तुम हीक कह
रहे हो साराज!
मैं कायब तुमको
करा नहीं पाऊँगी!

इसीलिए मैं पापा का काम
करूँगी, और पापा मेरा
काम। मैं वृत्त से निपटूँगी
और 'सवेरा' तुमसे!

मैं तुमको शुरू से ही इस
बाबूबू से पूरे रत्नन चाहता
था, बेटी। पर अब लज्जा है
कि इसके अलव और कोई
चरा नहीं है! अगर इस ये
लौका धुक गालती कभी अपने
काम का अंजाम नहीं दे पाएंगे। तुम
मुस की तरी हड्डियाँ लोड़ डालो। मैं
साराज मैं निपटना हूँ!

यह मेरी तक बीज से
बचकर तो यहाँ तक न जाने
कैसे आ गया, लेकिन मेरी
दूसरी बीज इसकी यहाँ से बच
कर जाने नहीं देगी!

अगर धूँधे मेरा गिटार न काट
कर होते, और मेरे स्पीकरों को
खराब न कर जाते तो मैं इसका
इतने भी बुरा हाल
करता!

सपेरा की दूसरी बीज में 'कंप्रेस्ड स्प्रिंग' बहने
लगी, और फिर वही सबमर्ली धुन इसमें तैरने
लगी, जिससे नागराज बड़ी मुश्किल से बच पाया
था-



ओह! फिर वही धुन! इस बार तो मेरे शरीर
में इतने साँप भी वहीं बचे हैं, जो मेरे शरीर को
बचकर सुरक्षा कवच बना लेंगे। और जब तक मैं इतने
घुटकारा पाऊँ कि कोई रास्ता सोच पाऊँगा, तब तक
मृत और पस्तु अधमरे ही चुके होंगे!

नागराज के सर्प अर्पों और चुहों को समझाने करने में व्यस्त थे। लेकिन उन पर भी बीन की स्वर लहरियों का असर हो रहा था-

ओह! यह धुन रोक दो सपेरा! वरना ये चुहे मेरी सर्प सेना से बच जायेंगे और फिर तुम लोगों पर हमला कर बैठेंगे!

तुमसे अपने जाल में नहीं फँसा सकता नागराज। चुहों की संख्या अब काफी कम हो चुकी है। ये अब तुमका पहंचायेगी भी तो छोड़ा मा। पर अगर मैंने बीन बन्द कर दी तो मेरी योजना ही चकला चूर हो जायगी!



ओह! इस बार मेरा करीर बहुत जल्दी धकता जा रहा है। क्योंकि सर्पों के करीर से निकल जाने के कारण मेरी अग्नि पहले ही क्षीण हो चुकी है। अपने सर्पों को अवैश देना ही रहेगा कि वे मेरे करीर पर फिर से कवच बनाने की कोशिश करें। इसाकि यह काम मुझिलती होना क्योंकि बीन की धुन पर मैं भी धिक्कने को तजबुर् हूँ, और मेरे सर्प भी!

पर इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं... है। स्करास्ता सलाक में जाता है। और बह रास्ता नदीक होने के साथ साथ मुझे अपने सकनद में जल्दी कानवही भी दिलवायगा।

और चुहों से लड़ने के लिए कुछ जांबज सर्पों को पीछे छोड़ बाकी सभी सर्प अलगा अलगा दिशाओं में सरनरा उठे-



और कनरे में दवा आने-जाने के लिए मौजूद सभी दरारों और छिद्रों को अपने करीरों से भरने लगे-

नागराज, अपने सर्पों की सार्विक संकेत भेजने लगे-



कुछ ही पलों में तरारते सपों
ने पूरे कसरे को मील बंद कर दिया था-



हज़ारों सपों ने एक साथ अपने
मुँह में गहरी हवा खींची-



और कसरे में एक झटका ला निर्वात उत्पन्न हो गया-

सबकी सोनें गले में घुटने के
साथ ही, संगीत तरंगों में
भी क्षीणता पैदा होने लगी-



आह! मैं फिर बीज की तरंगों से
आजाद हो रहा हूँ! मेरा सोचना सही
निकला! संगीत तरंगों, ध्वनि तरंगों का
ही रूप है! और ध्वनि तरंगों वगैरे किसी
साधन के जहाँ चल सकती! इस
कसरे का साधन धनी हवा के विल
होते ही संगीत तरंगों भी क्षीण हो रही है।
अब मुझे निरुक्त वन सेकंड और लंबों इस
संगीतमय कैद से आजाद होने में...

